पर्यावरण एवं पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा — एक प्रतिमान परिवर्तन

*निर्मला गुप्ता**

*सीमा सिंह***

पर्यावरण मात्र एक शाब्दिक एवं सैद्धांतिक अवधारणा न होकर एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक मानवीय समस्या है जो मानव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है, जिसमें सारे विश्व की चिंता समाहित है क्योंकि पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। अतः शोषण और विषमता जितनी कम होगी पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा। अपनी भावी पीढ़ी को जीवन की संपन्नता तभी सौंपी जा सकती है जब वर्तमान पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण जागरूक व कटिबद्ध हो। पर्यावरण प्रदूषण के कारण मानव जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है जिसका प्रमुख आधार भी मनोवैज्ञानिक, वैचारिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक है। अतः एक नये प्रकार का प्रदूषण वैचारिक प्रदूषण जो संपूर्ण प्रदूषण की जड़ है पर नियंत्रण कर लिया जाए तो मानव जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखा जा सकता है। इस दिशा में 'पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा' (Environmental Ethics Education) एक महत्त्वपूर्ण आधारस्तम्भ हो सकता है। पर्यावरण नीतिशास्त्र के माध्यम से ही व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति वैचारिक स्तर पर प्रदूषण के विचार को दूर किया जा सकता है। पर्यावरण नीतिशास्त्र इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली हर वस्तु को जैसे- प्लास्टिक, गोला-बारूद इत्यादि का यथासंभव पूर्ण त्याग करे। व्यक्ति स्वविवेक से संपूर्ण सृष्टि के प्रति हितकारी प्रवृत्तियाँ अपनाएँ। पर्यावरण प्रदूषण के प्रति अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व का बोध सिर्फ़ पर्यावरण अध्ययन से संभव नहीं है बल्कि मनुष्य के अंदर इस प्रकार का दृष्टिकोण विकसित किया जाए कि उसके मन एवं मस्तिष्क में पर्यावरण के प्रति वैचारिक स्तर पर भी प्रदूषण का विचार न आए। इस दिशा में पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा प्रासंगिक हो सकती है।

*शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, सतीशचन्द्र कालेज, बलिया, (उ.प्र.)

**शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिगरामऊ, जौनपुर, (उ.प्र.)

पर्यावरण असंतुलन आज के विश्व समुदाय के लिए एक ज्वलंत समस्या है, जिसका जनक स्वयं मानव है। वायु, जल, ध्वनि, मृदा प्रदूषण, ओज़ोन परत में छेद, घटता जलस्तर, बढ़ता तापमान, सिकुड़ते ग्लेशियर, बढ़ती मरुभूमि, लुप्त होते वन्य जीव, अतिवृष्टि, भू-स्खलन, नदियों का बढ़ता जलस्तर आदि प्राकृतिक प्रकोप आज के सभ्यतावादी युग के लिए बहुत बड़ी चुनौती बने हुए हैं। वैज्ञानिक तरक्की के उन्माद से ग्रस्त मानव प्रकृति का निर्मम दोहन करने में अपनी श्रेष्ठता समझ रहा है। पेड़ों की कटाई, अवैध खनन, अधिक मात्रा में जल का दोहन, पुराने वाहनों से निकलता धुँआ, मिलों की नालियों में बहती गंदगी, सड़क पर दौड़ते असंख्य वाहनों से निकलता धुँआ हमारे मानस पटल को दूषित कर रहा है। सिंह (2004)।

संयुक्त राष्ट्र संघ की 'जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थ्य पर खतरा और समाधान' नामक रिपोर्ट में इस बात का खुलासा किया गया है कि वायु प्रदूषण के कारण एक ओर जहाँ अनेक घातक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं वहीं दूसरी वायु में बढ़ती हुई विषैली गैसों के प्रभाव से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) का खतरा बढ़ता जा रहा है जो जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण है। इस रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों के चलते विश्वभर में डेढ़ लाख लोग सन् 2000 में काल कवलित हुए। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि बीसवीं शताब्दी का नवाँ दशक सबसे गर्म रहा। यही नहीं पिछले वर्ष गर्मी में 20 हजार लोग लू की अधिकता के चलते मारे गए। इस रिपोर्ट के अनुसार इसी तरह CO_2 की मात्रा बढ़ती गई तो अगली शताब्दी में पृथ्वी की सतह के तापमान में 1.4 से 5.8° सेल्सियस तक बढ़ने की भविष्यवाणी की गई है। इस कारण तापमान में होने वाली न्यूनतम वृद्धि से मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को रोक पाना असंभव होगा। आई.पी.सी.सी. अर्थात् 'इंटरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज' की रिपोर्ट के अनुसार 1990 की तुलना में समुद्र का जलीय स्तर 10 से 20 सेमी. तक बढ़ा है। पहाड़ों के हिमनदों की बर्फ लगातार पिघल रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार विगत 50 वर्षों में पृथ्वी का तापमान 1° सेल्सियस बढ़ा है। अब यदि 3.6° डिग्री सेल्सियस तापक्रम और बढ़ता है तो अंटार्कटिका के विशाल हिमखंड पिघल जाएँगे (लामा, 1995)।

संयुक्त राष्ट्र ने धरती को नुकसान पहँचाने वाली ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के उपायों पर सभी देशों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को सुगम बनाने के लक्ष्य से 'क्लाइमेट न्यूट्रल नेटवर्क' शीर्षक से एक ऑनलाइन सेवा प्रारंभ की है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम United Nations Environment Programme (U.N.E.P.) के तहत् ग्रीन हाउस गैसों की कटौती के विषय पर 21 जनवरी 2008 को मोनाको में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के मौके पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम के अध्यक्ष आचिम स्टेनर ने इस सेवा का शुभारंभ किया। गत वर्ष दिसंबर 2007 में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित सम्मेलन के बाद मोनाको का यह सम्मेलन पर्यावरण के मुद्दों पर दूसरा सबसे बड़ा सम्मेलन था जिसमें दुनिया के तकरीबन 154 देशों और सैकड़ों पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इस प्रकार पर्यावरण में परिवर्तन न केवल मन-मस्तिष्क बल्कि हमारी जीवन शैली एवं कार्यक्षमता को भी प्रभावित करता है। जनसंख्या वृद्धि एवं वैश्वीकरण से जहाँ एक तरफ पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है वहीं दूसरी ओर वैश्विक स्तर पर अनियंत्रित गरीबी, बेरोज़गारी एवं अशिक्षा की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। उपभोक्तावादी एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण मनुष्य अपने भौतिक सुख साधनों के लिए प्रकृति का अनियंत्रित शोषण कर रहा है जिससे संपूर्ण पारिस्थितिकी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और अनेक प्रकार की नयी-नयी समस्याएँ तथा घातक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इसी तरह यदि पर्यावरण की समस्याएँ बढ़ती रहीं तो एक दिन पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर विचार करने एवं व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर पर्यावरण के ऊपर जन चेतना लाने की नितांत आवश्यकता है। तभी एक स्वस्थ, स्वच्छ एवं सभ्य समाज का निर्माण संभव है। अत: वर्तमान परिवेश में पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए प्रतिमान परिवर्तन की आवश्यकता है जिसके लिए पर्यावरण नीति शास्त्र की शिक्षा अत्यंत प्रासंगिक हो सकती है (सिंह एंड गुप्ता, 2008)।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो पर्यावरणीय घटकों का विस्तृत ज्ञान, पर्यावरण तथा मानव के मध्य अंतर्संबंधों एवं पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान और पर्यावरण के प्रति संचेतना का विकास कर पर्यावरण संरक्षण की अभिवृद्धि व कौशल का विकास करती है। ललितपुर (नेपाल) के भोलाप्रसाद लोहानी ने पर्यावरणीय शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि *"पर्यावरणीय शिक्षा का अभिप्राय मानवीय पारिस्थितिकी एवं मानवीयता का प्रकृति के साथ संबंध स्थापन की जागरूकता विकसित करने से है।"*

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक स्रोत संरक्षण परिषद के नेवादा सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि—

"पर्यावरणीय शिक्षा वह शिक्षा प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव अपनी संसकृति तथा जैव भौतिक परिवेश के बीच पारस्परिक संबंधों की समझ तथा श्लाघा का विकास, सम्प्रत्यों का स्पष्टीकरण, कुशलताओं और अभिवृत्तियों का विकास करता है। यह शिक्षा व्यक्ति की निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवहार संहिता में भी अपेक्षित परिवर्तन लाती है।"

न्यूजीलैंड के रेंचैपमैन के अनुसार—

''पर्यावरणीय शिक्षा का अभिप्राय सद्नागरिकता विकसित करने के लिए संपूर्ण पाठ्यक्रम को पर्यावरणीय मूल्यों एवं समस्याओं पर केंद्रित करना है ताकि सद्नागरिकता का विकास हो सके तथा अधिगमकर्ता पर्यावरण के संबंध में भिज्ञ, प्रेरित तथा उत्तरदायी हो सके।''

सतत् या पोषणीय विकास की शिक्षा

सतत् या पोषणीय विकास की अवधारणा का उल्लेख सर्वप्रथम 1987 में पर्यावरण एवं विकास पर गठित वैश्विक आयोग ने अपने प्रतिवेदन 'आवर कॉमन यूचर' के अंतर्गत किया है। इस गठित वैश्विक आयोग के अध्यक्ष नार्वे के तत्कालीन प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेम ब्रन्टलैंड बनाए गए थे। इसी

प्रतिवेदन की सार्वभौमिकता के संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र ने दिसंबर 2002 में सामान्य सभा से पारित अपने प्रस्ताव में 2005 से 2014 के दशक को सतत् विकास के लिए शिक्षा दशक घोषित किया है।

सतत् विकास के लिए शिक्षा का संप्रत्यय पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा से सर्वथा भिन्न है जहाँ जागरूकता एवं अवबोध से प्रतिमान परिवर्तन संलग्नता, सहभागिता एवं समस्या समाधान के तरफ होता है। इस प्रकार सतत् विकास की अवधारणा पर्यावरण शिक्षा से अधिक व्यापक दृष्टिकोण लिए हुए है। अत: सतत् विकास के अधोलिखित उद्देश्य प्रस्तावित किए जा सकते हैं-

(क) पारिस्थितिकीय उद्देश्य — इसके अंतर्गत इको तंत्र एकरूपता, जैव विविधता, क्षमता निर्वहन एवं वैश्विक मुद्दे सम्मिलित हैं।

(ख) सामाजिक-सांस्कृतिक उद्देश्य — इसके अंतर्गत सशक्तिकरण, सहभागिता, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक पहचान एवं संस्थागत विकास आते हैं।

(ग) आर्थिक उद्देश्य — इसके अंतर्गत आर्थिक समृद्धि, आर्थिक समानता एवं आर्थिक कुशलता समाहित है (ब्राउन लेस्टर, 1981)।

पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा

आज जब जंगली जीवन का विनाश हो रहा है, मनुष्य-मनुष्य के खून का प्यासा है। प्रकृति का अंधाधुंध शोषण किया जा रहा है तो आज नीतिशास्त्र और उसकी अवधारणाओं की ज़रूरत सबसे अधिक है। पशु वध पाप है, हरे पेड़ को काटना पाप है, किसी भी जीव को सताना पाप है। पाप और पुण्य की सीमा रेखाओं को समझे बिना हम पर्यावरण के सत्य को नहीं समझ सकते। इसे समझना है तो पर्यावरण नीतिशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है *क्योंकि पर्यावरण नीतिशास्त्र पर्यावरण के प्रति सार्वभौमिक नैतिक कर्त्तव्यों एवं मूल्यों का विज्ञान है। यह विज्ञान आदर्श मानवीय चरित्र को रेखांकित करता है जिसकी परिणति आदर्श मानवीय गुणों के रूप में होती है (ब्यास, 1996)।*

पर्यावरण नीतिशास्त्र पर्यावरण शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। पर्यावरण नीतिशास्त्र से तात्पर्य पर्यावरणयुक्त व्यवहार, मूल्य एवं मानदंडों से है। यह एक प्रकार से पर्यावरण शिक्षा का नीतिशास्त्रीय उपागम है। जहाँ पर्यावरण शिक्षा को पोषणीय विकास के लिए शिक्षा के रूप में विश्लेषित किया जाता है वही पोषणीयता (sustainability) को एक नैतिक एवं नीतिशास्त्रीय अनिवार्यता/ आवश्यकता के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके आधारभूत तत्व सांस्कृतिक विविधता एवं परंपरागत ज्ञान हैं जिन्हें सम्मान देना आवश्यक हो गया है।

पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा को आत्मसात करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रम में एकीकृत चिंतन (Collaborative thinking) को सम्मिलित करना होगा। *प्रो. इयूजीन हारग्रोव* का मानना है कि अमेरिका के पब्लिक स्कूलों में यदि पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा को लागू किया जाएगा तो सिद्धांतविहीनता का भय उत्पन्न होगा क्योंकि पाश्चात्य संदर्भ में नीतिशास्त्र को धर्म से साहचर्य किया जाता है जिसके कारण लोगों का मत है कि पब्लिक स्कूल जैसी पंथनिरपेक्ष शिक्षण संस्था में नीतिशास्त्र की शिक्षा नहीं देनी चाहिए। इसके लिए उपयुक्त स्थान घर और चर्च ही है। यह पाश्चात्य चिंतन का यथास्थितिवादी दृष्टिकोण है।

दूसरी ओर प्रसिद्ध चिंतक नेलनडिंग्स भी पब्लिक स्कूल में नैतिक व नीतिशास्त्रीय शिक्षा पर आपत्ति करती है कि Secular Framework में इसकी शिक्षा नहीं दी जा सकती वहीं प्राइमरी एवं माध्यमिक स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम में 1958 से ही जापान में नैतिक शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण अंग है लेकिन जापान में भी नीतिशास्त्रीय मूल्यों की सिद्धांत-विहीनता गम्भीर समस्या है। हारग्रोव के अनुसार नीतिशास्त्रीय मूल्यों की सिद्धांत-विहीनता को रोकने हेतु पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा से पर्यावरण नागरिकता की शिक्षा के प्रतिमान परिवर्तन होना चाहिए। हारग्रोव के अनुसार नीतिशास्त्र शिक्षा एक कलंक का धब्बा है उसको सामाजिक नीतिशास्त्र के रूप में सम्मिलित कर दूर किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि नैतिकता या नीतिशास्त्र शिक्षा की जगह नागरिकता की शिक्षा (Teaching of Citizenship) दी जाए क्योंकि नागरिकता शब्द समुदाय-उन्मुख है। यह मानव समुदाय में व्यक्ति की भूमिका को विवेचित करता है।

पर्यावरण नागरिकता की शिक्षा का विचार विशेष रूप से संयुक्त राज्य में अर्थपूर्ण है जहाँ लोग नीतिशास्त्र को धार्मिक अंधविश्वास के रूप में लेते हैं। पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा जहाँ पब्लिक स्कूल में कठिन है वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण नागरिकता की शिक्षा उपयुक्त है क्योंकि यह नैतिक शिक्षा की नकारात्मक छवि से दूर है। पर्यावरण नागरिकता की शिक्षा का दृष्टिकोण संकुचित है जबकि पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा का दृष्टिकोण व्यापक है। सिद्धांत-विहीनता की समस्या को दूर करने के लिए शिक्षक को व्यक्तिगत मूल्य निर्णय का त्याग करना होगा तथा निष्पक्षता पर बल देना होगा एवं शिक्षण से स्पष्टीकरण के प्रतिमान परिवर्तन करना होगा। इसे अधोलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

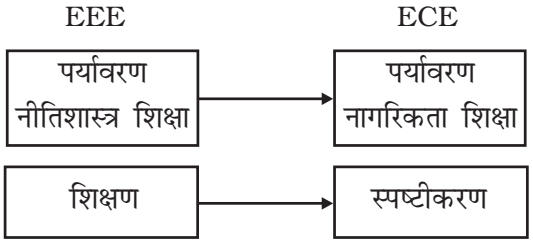

प्रतिमान परिवर्तन (हारग्रोव, 1989)

पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा को सार्वभौमिक रूप से प्रदान करने में सिद्धांत-विहीनता का भय एवं मूल्य सापेक्षतावाद का खतरा प्रमुख है जिसे स्वायत्तता से दूर किया जा सकता है क्योंकि पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा में स्वायत्तता एक अहम तत्व है। इसका उद्देश्य दैनिक जीवन में पर्यावरणीय उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करने की इच्छा रखना है। निष्कर्षत: भारतीय चिंतन पद्धति पाश्चात्य चिंतन पद्धति से अनिवार्यत: व्यापक दृष्टिकोण रखती है। इसलिए शैक्षिक प्रक्रिया में चिंतन योग्यता के उन्नयन को उपेक्षित किया गया तो शिक्षा मात्र प्रशिक्षण की अवधारणा तक ही सीमित रह जाएगी। इसके लिए जापान जैसे देश में पोषणीय विकास (Sustainable Development) के लिए निर्देश दिया गया है कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार हेतु शिक्षा में प्रणाली/पूर्ण चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, विश्लेषणात्मक तर्क एवं संचार योग्यता को समन्वित किया जाए। क्योंकि पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा मात्र सैद्धांतिक अवधारणा न होकर सांस्कृतिक विविधता, परंपरागत ज्ञान एवं जीवन पद्धति है।

पर्यावरण नीतिशास्त्र के उद्देश्य

(क) पर्यावरण नीतिशास्त्र को समझने हेतु छात्रों में सकारात्मक अभिवृद्धि का विकास करना।

(ख) छात्रों के अंदर पर्यावरण के प्रति चेतना उत्पन्न करना।

(ग) पर्यावरण नीतिशास्त्र को समझने हेतु सकारात्मक वातावरण सृजित करना।

(घ) छात्रों में पर्यावरण प्रदूषण की भयावहता के प्रति नैतिक मूल्य विकसित करना।

(ङ) छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्ञान, कौशल, अभिवृद्धियों तथा मूल्यों को विकसित करना।

(च) पर्यावरण नीतिशास्त्र के माध्यम से छात्रों में परंपरागत ज्ञान एवं सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान की भावना का विकास करना।

(छ) पर्यावरण नीतिशास्त्र के द्वारा छात्रों को दैनिक जीवन में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार करने योग्य बनाना।

(ज) छात्रों को पर्यावरण नीतिशास्त्र के बारे में अवधारणात्मक एवं वैचारिक ज्ञान के लिए अभिप्रेरित करना।

(झ) पर्यावरण नीतिशास्त्र के माध्यम से व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता को उच्च स्तर पर बनाए रखना।

पर्यावरण नीतिशास्त्र की उपादेयता

पर्यावरण मात्र एक शाब्दिक एवं सैद्धांतिक अवधारणा न होकर एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक मानवीय समस्या है जो मानव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है, जिसमें सारे विश्व की चिंता समाहित है क्योंकि पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। अत: शोषण और विषमता जितनी कम होगी पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा। अपनी भावी पीढ़ी को जीवन की संपन्नता तभी सौंपी जा सकती है जब वर्तमान पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण जागरूक व कटिबद्ध हो। आज हमारे सामने प्रदूषण से भी भयानक समस्या पश्चिम की भौतिकवादी सभ्यता के फलस्वरूप होने वाले दुष्परिणामों की है जिन्हें अपनाकर हमने भारतीय मूल्यों, परंपराओं एवं संस्कृति के मूलभूत आयामों पर चोट पहुँचाई। व्यक्ति में धर्म व संस्कृति की जगह पैसे का महत्त्व बढ़ गया है। व्यक्ति में भावनाओं का प्रवाह उल्टा चल रहा है, वह अहिंसा तथा अपरिग्रह का महत्त्व भूल गया है। देश में जाति, धर्म, क्षेत्र आर्थिक व सामाजिक असमानता से पर्यावरण असंतुलित हो रहा है तथा विभिन्न प्रकार के अपराधों में वृद्धि हो रही है। आज हमें अपनी प्राचीन संस्कृति एवं मूल्यों की ओर लौटना होगा तथा स्वार्थवृत्ति को त्यागना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर त्याग की भावना अपनाकर आत्म नियंत्रण करते हुए सामाजिकता की भावना को महत्त्व देना होगा तभी हमारा भौगोलिक एवं सामाजिक पर्यावरण संतुलित रह सकेगा (सचदेवा, 2005)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारी लापरवाही तथा जीवन मूल्यों एवं नैतिकता की उपेक्षा ने ही पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाया है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण मानव जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है जिसका प्रमुख आधार भी मनोवैज्ञानिक, वैचारिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक है। अत: एक नये प्रकार का प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण जो संपूर्ण प्रदूषण की जड़ है पर नियंत्रण कर लिया जाए तो मानव जीवन की गुणवत्ता को बनाये रखा जा

सकता है। इस दिशा में 'पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा' (Environmental Ethics Education) एक महत्त्वपूर्ण आधार-स्तंभ हो सकता है। पर्यावरण नीतिशास्त्र के माध्यम से ही व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति वैचारिक स्तर पर प्रदूषण के विचार को दूर किया जा सकता है। पर्यावरण नीतिशास्त्र इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली हर वस्तु को जैसे – प्लास्टिक, गोला बारूद इत्यादि का यथासंभव पूर्ण त्याग करें। जीवन में भोग की जगह त्याग, प्रवृत्तिवाद की जगह निवृत्तिवाद, असंयम की जगह संयम, भौतिकता की जगह आध्यात्मिकता को अपनाएँ। पाश्चात्य संस्कृति का अंधाधुंध अनुकरण छोड़ें तथा स्वविवेक से संपूर्ण सृष्टि के प्रति हितकारी प्रवृत्तियाँ अपनाएँ। पर्यावरण प्रदूषण के प्रति अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व का बोध सिर्फ पर्यावरण अध्ययन से संभव नहीं है बल्कि मनुष्य के अंदर इस प्रकार का दृष्टिकोण विकसित किया जाए कि उसके मन एवं मस्तिष्क में पर्यावरण के प्रति वैचारिक स्तर पर भी प्रदूषण का विचार न आए। इस दिशा में पर्यावरण नीतिशास्त्र शिक्षा प्रासंगिक हो सकती है अन्यथा पोषण विकास (Sustainable Development) एक सिद्धांत एवं कल्पना की चीज बनकर रह जाएगा जिससे बहुत समय तक पृथ्वी पर मानव जीवन एवं मानव जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखना संभव नहीं होगा।

संदर्भ

नेलनडिंग्स, 2002. '*एजुकेटिंग मॉरल पीपुल*', ए केयरिंग इन अल्टरनेटिव टू करेक्टर एजुकेशन, टीचर्स कालेज प्रेस, न्यूयार्क, पृ. 7

लामा, महेन्द्र पी., 1995. '*इनवारमेन्टल कन्सर्न इन साउथ एशिया*', मेनस्ट्रीम, 4 नवंबर

लेस्टर, बी, 1981. '*बिल्डिंग ए सस्टनेबुल सोसायटी*', न्यूयार्क : नार्टन एण्ड कंपनी

व्यास, हरिश्चन्द्र, 1996, '*विभिन्न विषयों के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा*', परिप्रेक्ष्य न्यूपा, नयी दिल्ली, वर्ष 3, अंक 1, अप्रैल

सचदेवा, एन. कुमार, 2005. '*बदलते परिवेश में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता*', परिप्रेक्ष्य न्यूपा, नयी दिल्ली, वर्ष 12, अंक 3, दिसंबर

सिंह, देवेन्द्र, 2004. '*पर्यावरण, पर्यावरण शिक्षा एवं संचार माध्यम*', मुक्त शिक्षा, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, नयी दिल्ली, जून

सिंह, देवेन्द्र एण्ड निर्मला गुप्ता, 2008. '*सतत् विकास के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण नीतिशास्त्रा की उपादेयता*', ट्रेड्स एंड थॉट इन एजुकेशन, इलाहाबाद, प्रकाशनार्थ स्वीकृत

हारग्रोव, इयूजीन सी., 1989. '*फाउंडेशन ऑफ इनवारमेन्टल इथिक्स*', डेन्टम : इन्वारमेन्टल इथिक्स बुक्स, पृ. 2

हारग्रोव, इयूजीन सी., 1996. '*दि रोल ऑफ सोशली इवाल्वड आइडियल्स इन इंवारमेंटल इथिक्स एजुकेशन*', इन कनाडा एंड द यूकोन : ए होलिस्टिक एप्रोच इनवाल्विंग द यूमनीटीज, वाल्युम 14, वाइट हार्स यूकोन कालेज, पृ. 20